धनेश्वर पाटीदार ने डेयरी व्यवसाय को स्वरोजगार बनाया

पशुपालक का नाम	:	श्री धनेश्वर पाटीदार
पिता का नाम	:	श्री धुलजी
उम्र	:	58 वर्ष
पता	:	नवाडेरा, (डूंगरपुर)
शिक्षा	:	4थी
मोबाइल	:	9571506789

धनेश्वर पाटीदार पुत्र धुलजी गांव नवाडेरा तहसील डूंगरपुर जिला डूंगरपुर के निवासी है। धनेश्वेर पाटीदार कई वर्षो से पशुपालन तथा कृषि कार्य कर रहे हैं। वर्षा किसानों के लिए एक पहेली बनी हुई है, ऐसे में पशुपालन में डेयरी व्यवसाय में स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं है। धनेश्वर ने डेयरी को अपनी आय का मुख्य स्त्रोत बनाकर पशुपालकों के लिए एक मिशाल कायम की है। उन्होंने 4 भैंस से डेयरी फार्मिंग शुरु किया तथा पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों की सलाह से पशुपालन में डेयरी को मुख्य व्यवसाय मानकर आगे बढ़ाया। वर्तमान में उनके पास कुल छोटे–बड़े 27 पशु हैं जिसमें 10 सुरती नस्ल की भैंस, 3 होल्स्टिन फ्रिजियन नस्ल की गाय तथा 14 बछड़े–बछड़ियों का डेयरी फार्म संचालित कर रहे हैं, जिससे प्रतिदिन 80 लीटर दूध का उत्पादन कर रहे हैं। अपना दूध किसी कॉआपरेटिव डेयरी को नहीं बेचकर स्वयं शहर में बेचते हैं। वर्तमान में उनकी आय 4 लाख है। यह अपनी जमीन का उपयोग पशुओं के हरे चारे के लिए कर रहे हैं। धनेश्वर पाटीदार पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर पशुओं का टीकाकरण, उनकी उचित देखभाल, पशुओं में बांझपन निवारण, संतुलित पशु आहार, खनिज लवण मिश्रण, विभिन्न बीमारियों एवं उनकी रोकथाम के बारे में विचार विमर्श करते रहते हैं। धनेश्वर पाटीदार पशुपालक के रूप में युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत हैं।

पशुपालन व कृषि को आजीविका का साधन चुना

पशुपालक का नाम	:	श्री विरेन्द्र कुमार पटेल
पिता का नाम	:	श्री हकसी पटेल
उम्र	:	52 वर्ष
पता	:	बेहना, बिछिवाड़ा (डूंगरपुर)
शिक्षा	:	11वीं
मोबाइल	:	9983766435

डूंगरपुर जिले के बिछिवाड़ा तहसील बेहना गाँव के विरेंद्र कुमार पटेल ने कृषि एवं पशुपालन में उचित सामंजस्य से आजीविका चलाने में सूझबूझ का परिचय दिया है। विरेंद्र कुमार पटेल कम पढे–लिखे होने के कारण खेती और पशुपालन को आजीविका चलाने का साधन चुना है जिसमें शुरुआत के दिनों में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। विरेंद्र कुमार पटेल ने 2 गाय और 4 भैंस से अपना डेयरी का व्यवसाय प्रारंभ किया। उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने लिए पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया और केंद्र के वैज्ञानिकों के संपर्क में रहे। वर्तमान में इनके पास 6 भैंस, 3 पाडियां, 5 गाय, 3 बछियां तथा खेती जोतने के लिए 2 बैल हैं। गाय व भैंसों का 20 लीटर दूध प्रतिदिन कॉआपरेटिव डेयरी को बेचकर आय अर्जित करते हैं तथा गोबर का उपयोग अपनी खेती में करके रसायनिक खाद की मात्रा तथा लागत को कम करने में सफल हुए हैं। ये गाय और भैंस का दूध बेचकर 2–5 लाख रुपये का प्रतिवर्ष लाभ कमा रहे हैं जिससे घर की आर्थिक स्थिति भी मजबूत बनी हैं। वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन करने के लिए पशु विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों से समय–समय पर सलाह लेते रहते हैं। विरेंद्र कुमार पटेल ने नई तकनीकों को उपयोग में लेकर गाँव में एक सफल पशुपालक के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

डेयरी फार्म से राजेश की बदली किस्मत

पशुपालक का नाम	:	श्री राजेश पटेल
पिता का नाम	:	श्री विरजी पटेल
उम्र	:	30 वर्ष
पता	:	ओडा छोटा, बिछिवाड़ा (डूंगरपुर)
शिक्षा	:	स्नातक
मोबाईल नं.	:	9783175727

राजस्थान में किसानों के लिए कृषि के साथ साथ पशुपालन भी आय का प्रमुख माध्यम रहा है। डेयरी व्यवसाय को अपनी आय का स्रोत बनाकर सफल हुए डूंगरपुर जिले के बिछिवाड़ा तहसील ओडा छोटा गांव के निवासी राजेश पटेल नवयुवकों के लिए प्रेरणा स्रोत है। राजेश पटेल परंपरागत रूप से खेतीबाड़ी तथा पशुपालन से जुड़े थे लेकिन पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के बाद वैज्ञानिक तरीकों से डेयरी फार्मिंग प्रारम्भ किया तथा उन्होंने 3 भैंस से डेयरी फार्मिंग शुरु किया। आज वर्तमान में उनके पास कुल छोटे–बड़े 23 पशु हैं जिसमें 8 सुरती नस्ल की भैंस, 5 क्रॉस ब्रीड नस्ल की गाय तथा 10 बछड़े–बछड़ियों का डेयरी फार्म संचालित कर रहे हैं। जिससे प्रतिदिन 60 लीटर दूध उत्पादन कर साबर कॉआपरेटिव डेयरी को बेचते हैं। इससे 3 लाख रुपये का प्रतिवर्ष मुनाफा कमा रहे हैं। इस सफलता को देखकर आस–पास के किसान प्रेरित होकर पशुपालन को आज एक व्यवसाय के रूप में देखने लगे हैं। राजेश पटेल का कहना है कि पशुपालन को वैज्ञानिक तरीके, पशु चिकित्सकों की सलाह तथा पशु वैज्ञानिकों के लगातार संपर्क में रहकर पशुपालन की देखभाल की जाए तो ज्यादा मुनाफा कमाया जा सकता है। पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों द्वारा पशुपालन से सम्बन्धित नई तकनीकों के बारे में आयोजित प्रशिक्षणों तथा मोबाइल के माध्यम से बताया जाता है। इसके साथ ही प्रशिक्षणों में पशुओं का टीकाकरण, उनकी उचित देखभाल, पशुओं मे बांझपन निवारण, संतुलित पशु आहार, साईलेज तथा हे बनाने की विधियों के बारे में समझाया जाता है जिससे क्षेत्र के सभी पशुपालकों को फायदा मिल रहा है।

प्रेम शंकर ने भैंस पालन को बनाया आर्थिक आधार

पशुपालक का नाम	:	श्री प्रेम शंकर पटेल
पिता का नाम	:	श्री रतन पटेल
उम्र	:	44 वर्ष
पता	:	उपरगांव, डूंगरपुर
शिक्षा	:	10वीं
मोबाईल नं.	:	9983000215

राजस्थान में वर्षा आधारित कृषि की अनिश्चितता के बीच में पशुपालन आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का एक अच्छा विकल्प है। आज के युग में बेरोजगारी की समस्या के चलते प्रेमशंकर पटेल पुत्र रतन पटेल गाँव उपरगाँव तहसील डूंगरपुर जिला डूंगरपुर के निवासी ने भैंसपालन को अपनी आय स्रोत बनाकर सफलता प्राप्त की। प्रेमशंकर पटेल ने पिता के साथ पारंपरिक खेती कर रहे थे लेकिन पारंपरिक खेती से प्रेमशंकर पटेल को वर्षा की अनिशिचतता के कारण आमदनी अच्छी नहीं हो रही थी तो उन्होंने कृषि के साथ साथ भैंसपालन को व्यवसाय रूप मे चयन किया। पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों ने खेती के साथ पशुपालन करने की सलाह दी। उन्होंने पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर से पशुपालन से संबधित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर पशुपालन व्यवसाय को वैज्ञानिक तरीके से करने का संकल्प लिया। प्रेमशंकर पटेल ने डेयरी फार्म का काम 3 भैंस से शुरू किया। आज उनके पास 8 भैंस और 5 पाडिया है जिससे प्रतिदिन 25 लीटर दूध उत्पादन कर रहे हैं। उनको प्रतिवर्ष 2.75 लाख रुपये तक की आय प्राप्त होती है। प्रेमशंकर पटेल अपनी जमीन के आधे हिस्से में पशुओं के लिए हरे चारे का उत्पादन कर रहे हैं। उन्होंने भैंस पालन की मदद से अपना आर्थिक सुधार कर आत्मनिर्भरता की मिशाल कायम की है। इसी प्रकार निरन्तर डेयरी फार्म को आगे बढ़ा रहे हैं। पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के लगातार सम्पर्क में रहते हुए और प्रशिक्षण शिविरों मे भाग लेकर पशुपालन की नवीनतम जानकारी प्राप्त करते हैं। वह अपने डेयरी व्यवसाय से खुश है तथा इस कार्य के लिए पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों का धन्यवाद प्रकट करते है।

बकरी पालन को बनाया आय का साधन

पशुपालक का नाम	:	श्री मोतीलाल कटारा
पिता का नाम	:	श्री नाथु कटारा
उम्र	:	65 वर्ष
पता	:	उन्द्रड़ा, डूंगरपुर
शिक्षा	:	11वीं
मोबाईल नं.	:	8000533365

मोतीलाल कटारा पुत्र नाथु कटारा गांव उन्द्रड़ा तहसील डूंगरपुर जिला डूंगरपुर के निवासी है। मोतीलाल कटारा कई वर्षो से परंपरागत तरीके से पशुपालन तथा कृषि कार्य कर रहे हैं। मोतीलाल कटारा ने महज 5 बकरियों से बकरीपालन प्रारम्भ किया। यह व्यवसाय 4 साल में 30 बकरियों तक पहुंच गया। उनके जुनून, मेहनत और प्रयास से बकरी पालन रंग लाया तथा लगातार पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करते रहते हैं। केंद्र के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन से उन्होंने बकरी पालन के साथ–साथ पशुओं के लिए अज़ोला की यूनिट स्थापित की है, जिससे पशुओं के लिए हरे चारे की कमी पूरी हो रही हैं। इनके साथ पशु विज्ञान केंद्र डूंगरपुर के वैज्ञानिकों की मदद से पशुपालन के क्षेत्र की नवीन जानकारी एवं सलाह से ही पशुधन की देखभाल में सहायता मिल रही है। मोतीलाल के अनुसार बकरी पालन में इस वर्ष लगभग 2 लाख रुपये की आमदनी हुई है। बकरियों में नियमित कृमिनाशक दवा और टीकाकरण समय समय पर केंद्र के वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार देते है। मोतीलाल का मानना है कि कम खर्चे में बकरी पालन से अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। गाय या भैंस के दूध की तुलना में बकरी का दूध अधिक मूल्य में बिकता है। मोतीलाल की सफलता से आस पास के गाँव वाले उनसे जानकारी लेने के लिए आते हैं तथा उन्होंने बकरी पालन करके समाज के सामने मिशाल पेश की है। इसके लिए पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों को धन्यवाद प्रकट करते हैं।